आंबेडकर अस्पताल के डाक्टरों ने बगैर चीरा वाली सर्जरी से मलाशय कैंसर के असहनीय दर्द से दिलाई राहत

प्रदेश में पहली बार राजधानी के सरकारी अस्पताल में हुई यह अनूठी सर्जरी, जरा-सी भी चूक पड़ सकती थी भारी, 30 वर्षीय युवक पीड़ा के कारण पिछले दो माह से ठीक से नहीं ले पा रहा था नींद

रायपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। डा. भीमराव आंबेडकर स्मृति चिकित्सालय के रेडियोलाजी विभाग में पहली बार मलाशय के असाध्य कैंसर का बगैर चीरा लगाए सुपीरियर हाईपो गैस्ट्रिक प्लेक्सस ब्लाक पद्धति से सफल इलाज किया गया। इससे मरीज को इस बीमारी से होने वाले असहनीय दर्द से छुटकारा मिल गया है।

चिकित्सालय प्रबंधन से मिली जानकारी के अनुसार 30 साल का युवक मलाशय के कैंसर (रेक्टल कैंसर) की वजह से असहनीय पीड़ा से गुजर रहा था। इसकी वजह से वह पिछले दो माह से नींद भी नहीं ले पा रहा था। निजी अस्पतालों में बेहतर इलाज नहीं मिलने पर वह आंबेडकर अस्पताल के क्षेत्रीय कैंसर संस्थान पहुंचा। जांच के बाद कैंसर रोग विशेषज्ञ डा. प्रदीप चंद्राकर ने डा. विवेक पात्रे से संपर्क करने की सलाह दी गई। डा. पात्रे ने मरीज की हिस्ट्री का अध्ययन कर बिना चीर-फाड़ वाली जटिल प्रक्रिया से इलाज करने का निर्णय लिया, जिसमें जरा सी भी चूक होने पर मरीज की जान को खतरा हो सकता था। इस प्रक्रिया में दर्द निवारक गुणों वाली दवा फिनोल का इस्तेमाल किया गया, जिसे बिना बड़े आपरेशन के नीडल के माध्यम से पीठ के दोनों हिस्सों में प्रवेश कराया गया। इस दवा को बनाने में बायोकेमिस्ट्री विभाग के डा. देवप्रिय रथ का विशेष सहयोग रहा। इस प्रक्रिया में डा. प्रेम चौधरी, डा. रसिका, डा. सूरज, डा. कवि, डा. अनामिका, डा. पल्लवी, डा. लीना और तकनीशियन गजोधर व रूप सिंह का विशेष सहयोग रहा। मरीज का इलाज डा. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना से निश्शुल्क हुआ।

सर्जरी के दौरान आपरेशन थिएटर में मौजूद आंबेडकर अस्पताल के रेडियोलाजी विभाग के चिकित्सक। ● आस्पताल

यह हैं मलाशय कैंसर के लक्षण

कैंसर विभाग के विशेषज्ञ डा. प्रदीप चंद्राकर ने बताया कि आंत के आखिरी कुछ इंच के हिस्से को मलाशय कहा जाता है। यह कोलोन (बड़ी आंत) के आखिरी हिस्से के अंत से शुरू होता है। यह गुदा के छोटे, संकीर्ण मार्ग तक जाता है। शरीर के कई अन्य अंगों की तरह मलाशय में भी कैंसर जैसे रोग होने का जोखिम रहता है। मलाशय कैंसर के लक्षणों में अनियमित रूप से मल आना, पेट के निचले हिस्से में असहनीय दर्द होना, मल में खून आना, आंतों में रुकावट होना आदि शामिल हैं।

इस तरह हुई बिना चीरा वाली सर्जरी

डा. विवेक पात्रे ने बताया कि सुपीरियर हाइपो गैस्ट्रिक प्लेक्सस ब्लाक एक ऐसी दर्द निवारक प्रक्रिया है, जिसमें पेट के निचले हिस्से से दर्द की संवेदना को मस्तिष्क तक ले जाने वाली नसें (सुपीरियर हाईपो गैस्ट्रिक प्लेक्सस) में सीटी स्कैन मशीन की मदद से इंजेक्शन के माध्यम से फिनोल को डाला जाता है। फिनोल को डालते ही मरीज को फौरन दर्द से राहत मिल जाती है। रीढ़ की हड्डी और पीठ के निचले हिस्सों के बीचों-बीच से आगे जाते हुए सुपीरियर हाईपो गैस्ट्रिक प्लेक्सस तक पहुंचकर दवाई डालना बहुत जोखिम भरा रहता है।

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में मरीजों के जीवन को दर्दरहित बनाने के लिए इस प्रकार

के ब्लाक लगाए जाते हैं, जिससे मरीज अपना जीवन सामान्य लोगों की तरह व्यतीत कर सकता है। यह जटिल प्रक्रिया और जोखिम भरी है, इसलिए इसे बहुत कम किया जाता है।

– प्रो. डा. विवेक पात्रे
इंटरवेंशनल रेडियोलाजिस्ट,
आंबेडकर अस्पताल

हरिभूमि

रायपुर - रायपुर भूमि

10 May 2023

बहुत कम हो रहा है।

राज्य में पहली बार असाध्य बीमारी का दर्द खत्म करने हुआ उपचार

मलाशय का कैंसर, असहनीय दर्द से दो माह तक बैठे-बैठे सोता था मरीज, इलाज के बाद राहत

हरिभूमि न्यूज ▸▸| रायपुर

मलाशय के कैंसर की असहनीय पीड़ा सह रहा युवक लेट नहीं पाता था, वह पिछले दो माह से बैठे-बैठे ही सोता था। आंबेडकर अस्पताल के रेडियोलॉजी विभाग के डाक्टरों ने इलाज के माध्यम से उसका दर्द खत्म कर परेशानी का समाधान किया। रेक्टल कैंसर के दर्द को समाप्त करने राज्य में पहली बार उपचार प्रक्रिया पूरी की गई। जानकारी के मुताबिक तीस साल का युवक पर कैंसर की बीमारी के इलाज के दौरान दी जाने वाली दर्द

निवारक दवा भी असर नहीं कर रही थी। विभिन्न स्तर पर इलाज की कोशिश के बाद मरीज अपने परिवार के साथ आंबेडकर अस्पताल पहुंचा। क्षेत्रीय कैंसर संस्थान के डॉ. प्रदीप चंद्राकर ने उसे रेडियोलॉजी विभाग जाने की सलाह दी। इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. विवेक पात्रे ने मरीज की हिस्ट्री का सूक्ष्म अध्ययन कर लगातार दो महीने से असहनीय पीड़ा को देखते हुए बिना चीर-फाड़ वाली जटिल प्रक्रिया पूरी की। इससे मरीज आसानी से दैनिक कार्य पूरा करने, उठने-बैठने और लेटने में सक्षम हो गया। डाक्टरों को युवक ने बताया था कि दो महीने से सिर्फ बैठ पाता था, नींद भी बैठकर लेता था, खड़ा होना तो दूर की बात थी। इस प्रक्रिया में प्रमुख रूप से डॉ. प्रेम चौधरी, डॉ. रसिका, डॉ. सूरज, डॉ.कवि, डॉ. अनामिका, डॉ. पल्लवी, डॉ. लीना एवं तकनीशियन गजोधर व रूप सिंह का विशेष सहयोग रहा। मरीज का इलाज डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना से निःशुल्क हुआ।

दर्द निवारकर फिनोल का उपयोग

इस प्रक्रिया में दर्द निवारक गुणों वाली दवा फिनोल का इस्तेमाल किया गया, जिसे बिना बड़े ऑपरेशन के नीडल के माध्यम से पीठ के दोनों हिस्सों में इंजेक्ट किया गया। इस दवा को बनाने में बायोकेमिस्ट्री विभाग के डॉ. देवप्रिय रथ का सहयोग रहा। डॉ. विवेक पात्रे के अनुसार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में मरीजों के जीवन को दर्दरहित बनाने के लिए इस प्रकार के ब्लॉक लगाए जाते हैं, जिससे मरीज अपना जीवन सामान्य लोगों की तरह व्यतीत कर सकता है।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajdhani - 10 May 2023 - 10raj3
epaper.navabharat.news

प्रदेश में पहली बार इस तरह का इलाज, आम्बेडकर अस्पताल की बड़ी उपलब्धि

मलाशय के कैंसर से होने वाले असहनीय दर्द से मिली मुक्ति

दर्द इतना ज्यादा कि दो माह से ठीक से सोया नहीं मरीज, सोता था तो बैठे-बैठे बगैर चीरा लगाए युवक को मिली राहत

नवभारत रिपोर्टर । रायपुर।

राज्य के सबसे बड़े शासकीय अस्पताल डॉ. बी.आर. आम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय के रेडियोलॉजी विभाग के डॉक्टरों ने पहली बार मलाशय के असाध्य कैंसर से होने वाले दर्द से राहत देते हुए बगैर चीरा लगाए सुपीरियर हाइपोगैस्टिक प्लेक्सस ब्लॉक का इलाज करके बड़ी उपलब्धि हासिल की है। मरीज को दर्द इतना ज्यादा था कि ठीक से सो नहीं पाता था। उसे बैठे-बैठे सोना पड़ता था।

रेडियोलॉजी विभाग में ये सफल प्रक्रिया इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. विवेक पात्रे एवं उनकी टीम द्व□ारा की गई। डॉ. पात्रे के अनुसार संभवतः मलाशय के कैंसर की बीमारी में दर्द को खत्म करने के लिए प्रदेश में किया गया यह पहला सफल प्रोसीजर है। प्रोसीजर के बाद मरीज को दर्द से राहत मिल गई है। स्वस्थ होने के बाद मरीज अपने दैनिक कार्य करने में सक्षम है, जो अब तक ठीक से उठने व सोने में भी सक्षम नहीं था।

दवा से भी राहत नहीं मिल रही थी

डॉ. पात्रे ने बताया कि 30 वर्षीय मरीज को मलाशय का कैंसर (रेक्टल कैंसर) हो गया था। इसके कारण वह असहनीय पीड़ा से गुजर रहा था। दर्द से राहत पाने दर्द निवारक दवाओं का सेवन किया फिर भी राहत नहीं मिली। तब इलाज के लिए आम्बेडकर अस्पताल के क्षेत्रीय कैंसर संस्थान के डॉ. प्रदीप चंद्राकर ने डॉ. पात्रे से संपर्क करने की सलाह दी। डॉ. पात्रे ने मरीज की हिस्ट्री की सूक्ष्मता से जांच की और बिना चीर-फाड़ वाली जटित प्रक्रिया को करने का निर्णय लिया। इस प्रक्रिया में प्रमुख रूप से डॉ. प्रेम चौधरी, डॉ. रसिका, डॉ. सूरज, डॉ. कवि, डॉ. अनामिका, डॉ. पल्लवी, डॉ. लीना एवं तकनीशियन गजोधर एवं रूप सिंह का विशेष सहयोग रहा।

ऐसे की जाती है प्रक्रिया

डॉ. विवेक पात्रे ने बताया कि सुपीरियर हाइपो गैस्टिक प्लेक्सस ब्लॉक एक ऐसी दर्द निवारक प्रक्रिया है, जिसमें पेट के निचले हिस्से से दर्द की संवेदना को मस्तिष्क तक ले जाने वाली नसों में सीटी स्कैन मशीन की मदद से इजेक्शन के माध्यम से फिनोल डाला जाता है। फिनोल डालते ही मरीज को तत्काल दर्द से राहत मिल जाती है। रीढ़ की हड्डी और पीठ के निचले हिस्सों के बीचों-बीच से आगे जाते हुए सुपीरियर हाइपो गैस्टिक प्लेक्सस तक पहुंचकर दवाई डालना बहुत जोखिम भरा रहता है।

मलाशय में कैंसर दर्द इतना ज्यादा कि दो माह से सोता था तो बैठे-बैठे

अंबेडकर अस्पताल में बिना चीरा के सफल ऑपरेशन

'छत्तीसगढ़' संवाददाता

रायपुर, 9 मई। राज्य के सबसे बड़े शासकीय अस्पताल डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय के रेडियोलॉजी विभाग के डॉक्टरों ने पहली बार मलाशय के असाध्य कैंसर से होने वाले दर्द से राहत देते हुए बगैर चीरा लगाये सुपीरियर हाइपोगैस्ट्रिक प्लेक्सस ब्लॉक नामक इलाज करके बड़ी उपलब्धि हासिल की है। रेडियोलॉजी विभाग में ये सफल प्रक्रिया/प्रोसीजर इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. विवेक पात्रे एवं टीम के द्वारा की गई।

डॉ. विवेक पात्रे के मुताबिक संभवत: यह मलाशय के कैंसर की बीमारी में दर्द को खत्म करने के लिये छत्तीसगढ़ राज्य में किया गया पहला सफल प्रोसीजर है। प्रोसीजर के बाद मरीज को दर्द से राहत मिल गई है। मरीज के घरवालों के अनुसार मलाशय के कैंसर के कारण मरीज असहनीय दर्द से पीड़ित था जिसकी वजह से वो पिछले 2 महीने से सिर्फ बैठ पाता था, नींद भी बैठ के लेता था खड़ा होना तो दूर की बात थी। उसे अब दर्द से अब पूर्णत: राहत मिल गई है। स्वस्थ होने के बाद मरीज

अपने दैनिक कार्य करने में सक्षम है जो अब तक उठने और लेटने में भी सक्षम नहीं था।

इस प्रक्रिया में दर्द निवारक गुणों वाली दवा फिनोल का इस्तेमाल किया गया जिसे बिना बड़े ऑपरेशन के नीडल के माध्यम से पीठ के दोनों हिस्सो में इंजेक्ट किया गया। इस दवा को बनाने में बायोकेमिस्ट्री विभाग के डॉ. देवप्रिय रथ का विशेष सहयोग रहा। प्रक्रिया के सफल हो जाने के बाद 30 वर्षीय युवक को दर्द से राहत मिल गई।

कैंसर विभाग के विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप चंद्राकर ने बताया कि आंत के आखिरी कुछ इंच के हिस्से को मलाशय कहा जाता है। यह कोलोन (बड़ी आंत) के आखिरी हिस्से के अंत से शुरू होता है और यह गुदा के छोटे, संकीर्ण मार्ग तक जाता है। शरीर के कई अन्य अंगों की तरह मलाशय में भी कैंसर जैसे रोग होने के अधिक जोखिम रहते हैं। मलाशय कैंसर के लक्षणों में अनियमित रूप से मल आना, पेट में के निचले हिस्से में असहनीय दर्द होना, मल में खून आना और आंतों में रुकावट होना आदि शामिल है।

इस प्रक्रिया में प्रमुख रूप से डॉ. प्रेम चौधरी, डॉ. रसिका, डॉ. सूरज, डॉ.कवि, डॉ. अनामिका, डॉ. पल्लवी, डॉ. लीना एवं तकनीशियन गजोधर व रूप सिंह का विशेष सहयोग रहा। मरीज का इलाज डॉ. खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना से निशुल्क हुआ।